शूकर जो रविवार को घर आया

अपप्लेशियन लोककथा

शूकर जो रविवार को घर आया

अपप्लेशियन लोककथा

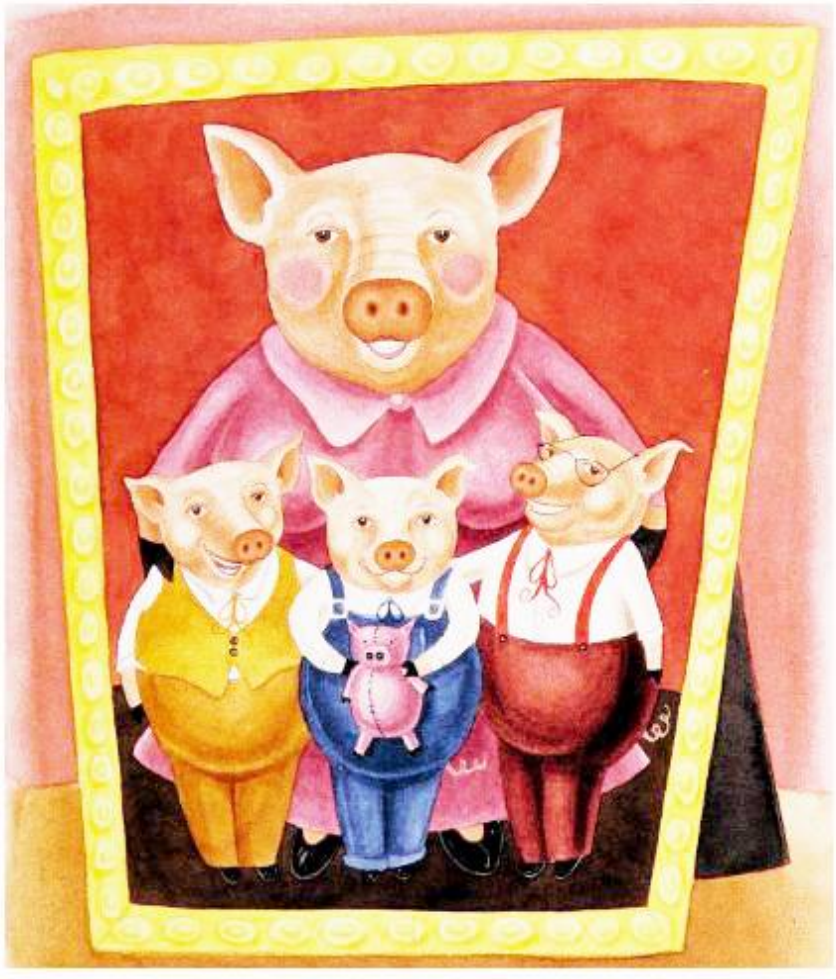

बहुत समय पहले एक जंगल में एक शूकरी रहती थी.

उसके तीन नन्हे बच्चे थे, टॉमी, विल्ली और जैकी.

दिन-प्रतिदिन, तीनें नन्हे शूकर बस खूब खाते और सोते. वह बड़े होते गए और इतने बड़े हो गए कि अपनी गुफा में एक साथ रहना उनके लिए कठिन हो गया.

एक दिन शूकरी ने सबसे बड़े बच्चे टॉमी को बुलाया. “अब समय आ गया है कि तुम यह घर छोड़ कर अपना घर बनाओ और स्वयं अपनी देखभाल करना सीखो.” उस रात माँ ने वह सब चीज़ें इकट्ठी कर लीं जिनकी आवश्यकता टॉमी को घर छोड़ने पर पड़ सकती थी.

अगली सुबह, नाश्ते के बाद, माँ ने टॉमी से कहा, “अब मैं दो बातें तुम से कहना चाहती हूँ. अगर तुम अपना घर बनाओगे तो ईंटों और पत्थरों से बनाना. और रविवार को घर आकर माँ से मिलना.” माँ ने टॉमी को प्यार किया और उसे घर से विदा किया.

सामान से लदी वैग्न टॉमी सड़क पर खींचने लगा. उसने उस लोमड़ी को न देखा जो झाड़ियों के पीछे छिपी थी. अचानक लोमड़ी कूद कर उसके सामने आ गई.

"नन्हे शूकर," लोमड़ी ने कहा. "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं अपने लिए एक घर बनाऊँगा और उसमें अकेले रहना सीखूँगा," टॉमी ने उत्तर दिया.

"अपना घर बनाने के लिए तुम किस वस्तु का उपयोग करोगे?" लोमड़ी ने पूछा.

"मेरी माँ ने कहा था कि मुझे घर ईटों और पत्थरों को बनाना चाहिए," टॉमी ने कहा.

"पत्थरों का घर न बनाना," लोमड़ी ने कहा. "पत्थरों का घर गिर सकता है और तुम्हें कुचल सकता है. अपना घर मक्के के डंठलों से बनाना."

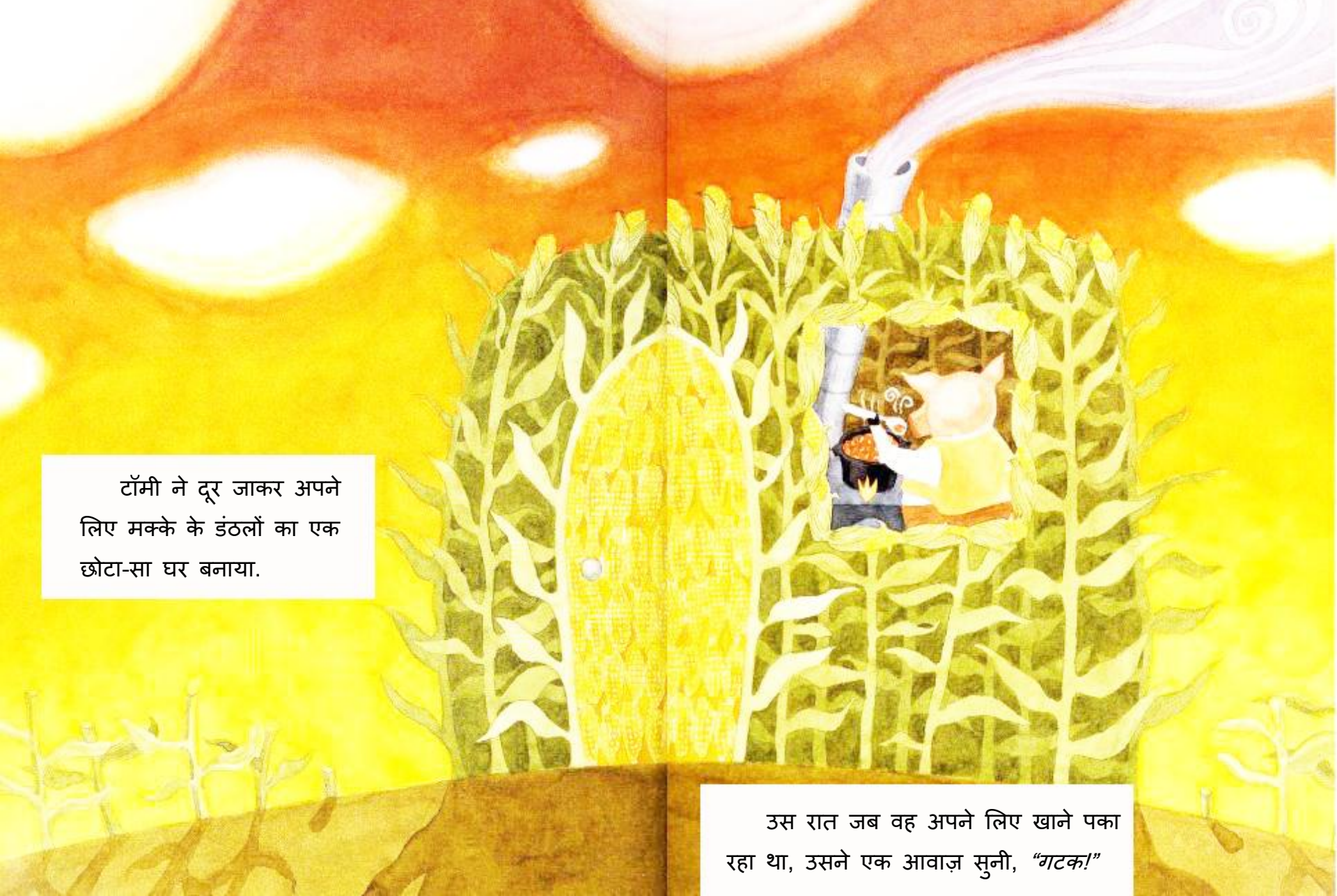

टॉमी ने दूर जाकर अपने लिए मक्के के डंठलों का एक छोटा-सा घर बनाया.

उस रात जब वह अपने लिए खाने पका रहा था, उसने एक आवाज़ सुनी, *“गटक!”*

यह लोमड़ी द्वारा नन्हे शूकर को निगलने की आवाज़ थी.

और रविवार के दिन टॉमी अपनी माँ से मिलने नहीं आया.

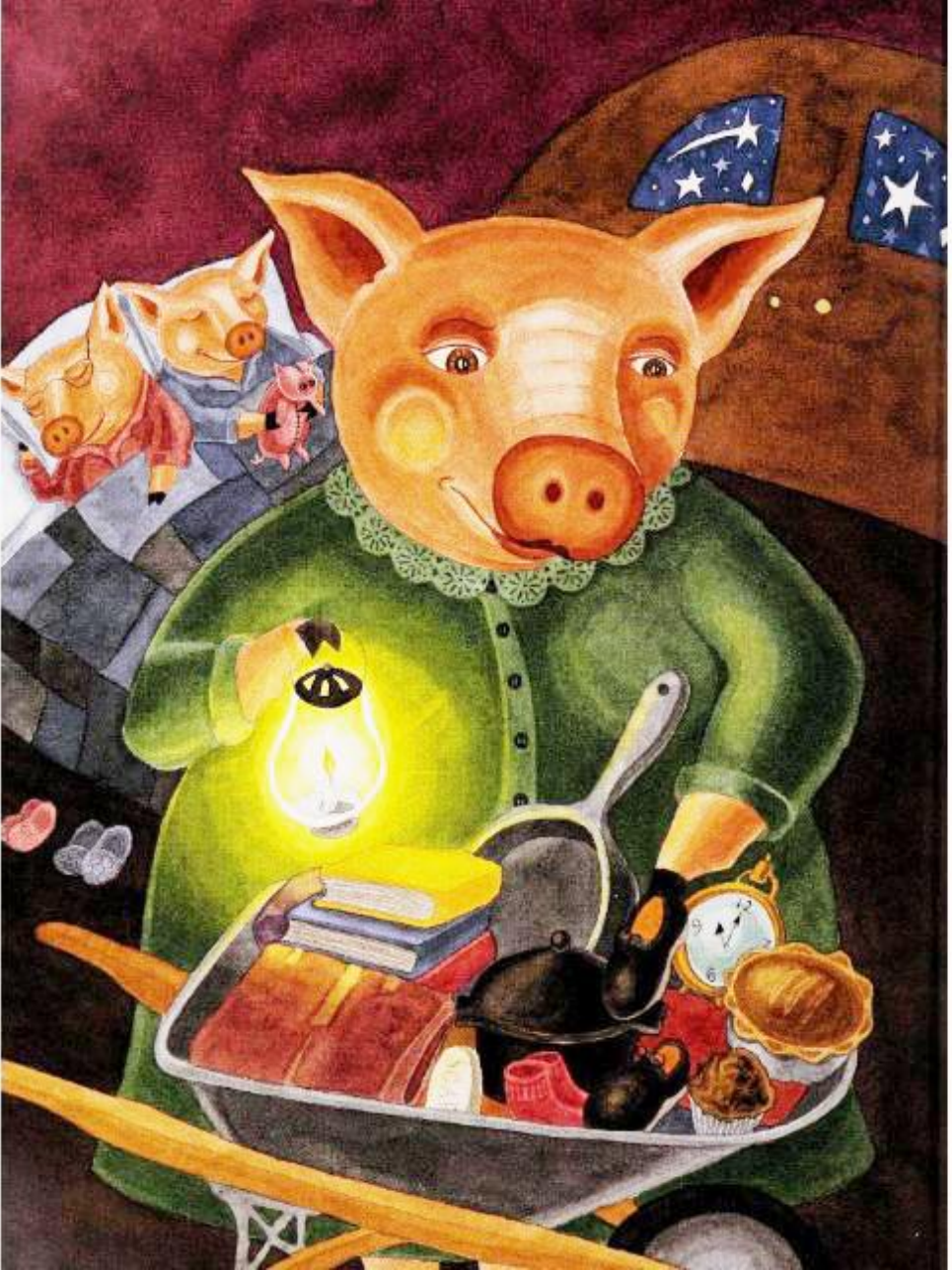

इस बीच अन्य दोनों बच्चे खूब खा रहे थे और सो रहे थे. एक दिन माँ ने विल्ली को बुलाया, “तुम्हारे इस घर से जाने और स्वयं अपनी देखभाल करने का समय आ गया है.” रात में माँ ने वह सब चीज़ें इकट्ठी कर लीं जिनकी आवश्यकता विल्ली को घर छोड़ने पर पड़ सकती थी.”

अगली सुबह माँ ने विल्ली से कहा, “मुझे दो बातें तुम से कहनी हैं. अगर तुम घर बनाओगे तो ईंटों और पत्थरों से बनाना. और रविवार को घर आकर माँ से मिलना.”

फिर उसने विल्ली को प्यार किया और वह चल दिया.

एक शूकर के लिए भरा हुआ ठेला धकेलना बहुत कठिन होता है. विल्ली ने उस लोमड़ी को न देखा जो झाड़ियों में छिपी हुई थी और जो कूद कर अचानक उसके सामने आ गई.

“नन्हे शूकर,” लोमड़ी ने कहा. “तुम कहाँ जा रहे हो?”

“मैं अपने लिए एक घर बनाऊँगा और अपनी देखभाल करना सीखूँगा,” विल्ली ने उत्तर दिया.

“नन्हे शूकर अगर तुम ईटों और पत्थरों का घर बनाने का सोच रहे हो तो मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहूँगी. यहाँ की ईटें और पत्थर घर बनाने के लिए बहुत ठंडे हैं. अगर तुम्हें आरामदेह घर चाहिए तो घास के ढेर में अपना घर बनाना.”

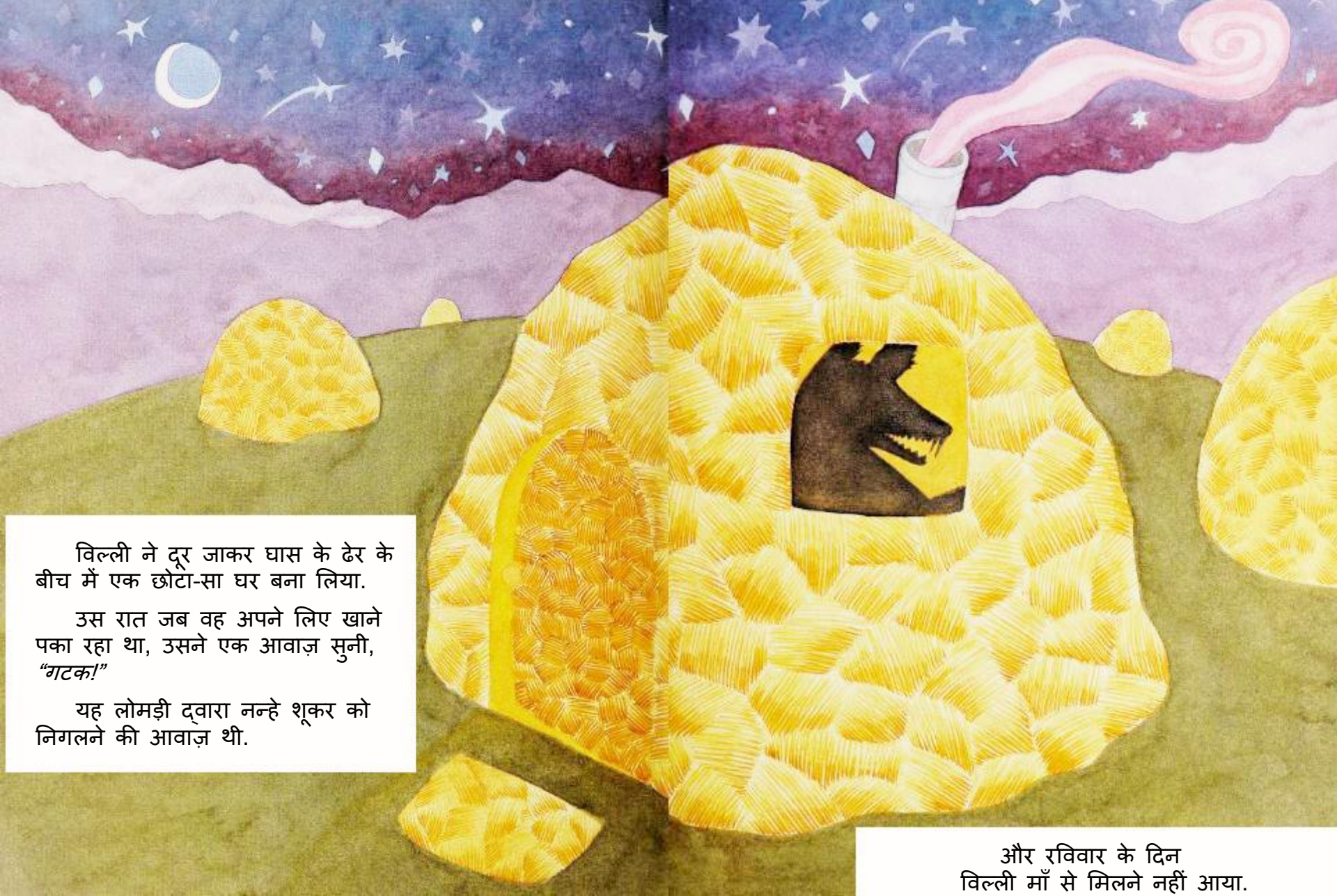

विल्ली ने दूर जाकर घास के ढेर के बीच में एक छोटा-सा घर बना लिया.

उस रात जब वह अपने लिए खाने पका रहा था, उसने एक आवाज़ सुनी, *"गटक!"*

यह लोमड़ी द्वारा नन्हे शूकर को निगलने की आवाज़ थी.

और रविवार के दिन
विल्ली माँ से मिलने नहीं आया.

और इस बीच गुफा में जैकी और उसकी माँ खूब खाते और सोते थे. शीघ्र ही जैकी ने माँ से कहा, “इस घर से मेरे जाने और स्वयं अपनी देखभाल करने का समय आ गया है.”

उस रात जैकी ने एक बड़े बोरे में वह सारी चीज़ें इकट्ठी कर लीं जिनकी आवश्यकता अपनी देखभाल करने के लिए उसे पड़ सकती थी.

जैकी निश्चित कर लेना चाहता था कि घर लौटने का रास्ता वह खोज पाएगा. इसलिए बोरा उठा कर वह सड़क पर ले आया, उसने अपने आसपास देखा. जल्दी ही उसने लंबे-दाँतों-वाली, एक विशाल लोमड़ी देखी, जिसके मुँह से लार टपक रही थी, और वह पेड़ों के पीछे छिप-छिप कर चल रही थी.

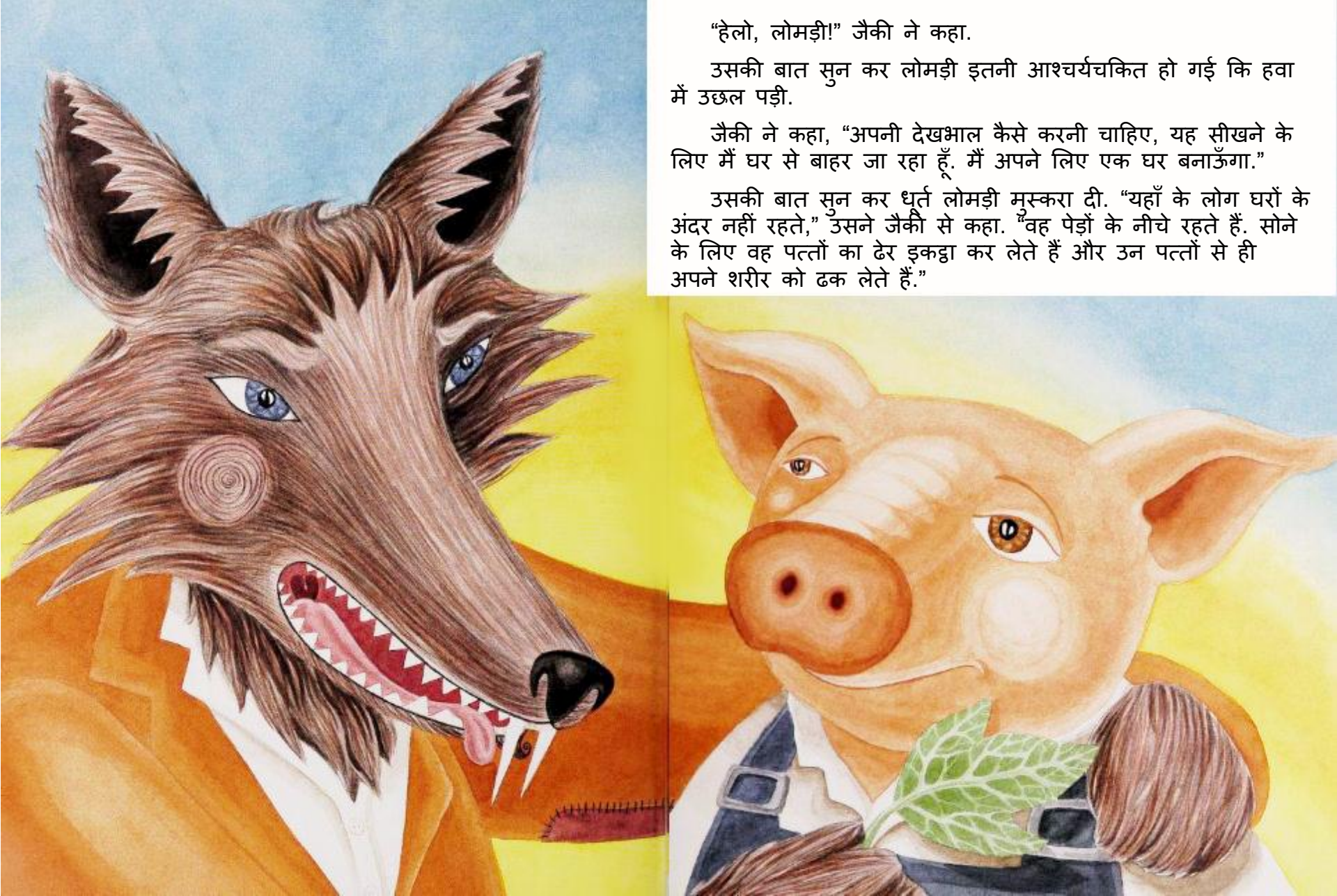

"हेलो, लोमड़ी!" जैकी ने कहा.

उसकी बात सुन कर लोमड़ी इतनी आश्चर्यचकित हो गई कि हवा में उछल पड़ी.

जैकी ने कहा, "अपनी देखभाल कैसे करनी चाहिए, यह सीखने के लिए मैं घर से बाहर जा रहा हूँ. मैं अपने लिए एक घर बनाऊँगा."

उसकी बात सुन कर धूर्त लोमड़ी मुस्करा दी. "यहाँ के लोग घरों के अंदर नहीं रहते," उसने जैकी से कहा. "वह पेड़ों के नीचे रहते हैं. सोने के लिए वह पत्तों का ढेर इकट्ठा कर लेते हैं और उन पत्तों से ही अपने शरीर को ढक लेते हैं."

“धन्यवाद, लोमड़ी जी,” जैकी ने कहा. लेकिन जैसे ही लोमड़ी आँख से ओझल हुई, जैकी पत्थर और ईटें इकट्ठी करने लगा.

दिन बीतने से पहले ही जैकी ने ईटों और पत्थरों का एक छोटा, सुंदर घर बना लिया था.

जैकी ने बोरे से सारा सामान निकाल लिया. उसने चूल्हे में आग जलाई और उसके ऊपर एक बड़े बर्तन में लोबिया पकने के लिए रख दिये. फिर एक दोलन-कुर्सी पर बैठ कर आराम करने लगा.

अचानक ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ उसे सुनाई दी.

“कौन है?” जैकी ने पूछा.

"मैं लोमड़ी हूँ. तुम मेरे पड़ोसी बनने वाले हो इसलिए मैं तुम से मिलने आई हूँ."

"मुझ से मिलने के लिए यह सही समय नहीं है," जैकी ने कहा. "अतिथि का सत्कार करने के लिए घर की सजावट करने का मुझे समय ही नहीं मिला. आप को कुछ समय बाद आना पड़ेगा."

"ओह, ठीक है," लोमड़ी बोली. "जैसा तुम चाहो. लेकिन नन्हे शूकर, यहाँ बाहर बहुत ठंड है. इस के पहले कि मैं घर लौट जाऊँ, क्या तुम मुझे बस अपनी नाक गर्म करने दोगे?"

अगर मैं उसे सिर्फ नाक गर्म करने दूँ तो कोई हानि नहीं होगी, जैकी ने सोचा. उसने दरवाज़ा थोड़ा सा खोल दिया.

जब लोमड़ी दरवाज़े के पार कूदने लगी तो जैकी ने धड़ाम से दरवाज़ा लोमड़ी की नाक पर बंद कर दिया.

“नाक गर्म कर के कैसा महसूस हो रहा है?” जैकी ने पूछा.

“बड़अअआ अच्छा महसूस हो रहा है!” लोमड़ी बोला. “अब, क्या मुझे अपना सिर गर्म करने दोगे?”

जैकी ने सोचा और फिर उसने दरवाज़ा थोड़ा सा खोल दिया.

जब लोमड़ी ने कूद कर दरवाज़ा पार करने की दुबारा कोशिश की तो जैकी ने धड़ाम से दरवाज़ा उसकी गर्दन पर बंद कर दिया.

“अपना सिर गर्म कर के कैसा लग रहा है?” जैकी ने पूछा.

लोमड़ी मुश्किल से ही बोल पा रही थी. वह फटी हुई आवाज़ में बोली, “बड़अअआ अच्छा लग रहा है! अब तुम मुझे अपना शरीर गर्म करने दोगे?”

जैकी ने सोचा. फिर वह धीरे से दरवाज़ा थोड़ा और खोलने लगा.

लोमड़ी ने जब भीतर आने की फिर कोशिश की तो जैकी ने दरवाज़ा उसकी पूँछ पर धड़ाम से बंद कर दिया. लोमड़ी की पूँछ लगभग कट ही गई. लेकिन वह दरवाज़े में डटी रही.

“अपना शरीर गर्म कर के कैसा महसूस हो रहा है?” जैकी ने पूछा.

लोमड़ी को पूँछ में बहुत दर्द हो रहा था. फिर भी वह बोली, “बड़अअआ अच्छा महसूस हो रहा है!” अब अगर तुम मुझे अपनी पूँछ गर्म करने दो तो मैं घर जाने योग्य हो जाऊँगी.

जैकी चाहता था कि लोमड़ी घर लौट जाये. वह धीरे-धीरे दरवाज़ा खोलने लगा.

जैसे ही दरवाज़े में फंसी उसकी पूँछ मुक्त हुई, लोमड़ी कूद कर घर के अंदर आ गई.

घर के भीतर आने में लोमड़ी को बहुत मेहनत करनी पड़ी थी और अब वह थक चुकी थी. वह जलती हुई अँगीठी के पास लेट गई और तुरंत ही उसे नींद आ गई.

शीघ्र ही लोमड़ी नींद में बातें करने लगी.

“रात के खाने में लोबिया और शूकर का माँस! रात के खाने में लोबिया और शूकर का माँस! यम यम यम! रात के खाने में लोबिया और शूकर का माँस!”

जैकी ने अँगीठी पर पकते हुए लोबिया को देखा. फिर दर्पन में उसने अपने-आप को देखा. अचानक उसे समझ आ गया कि लोमड़ी उसे ही खाने की बात सोच रही थी.

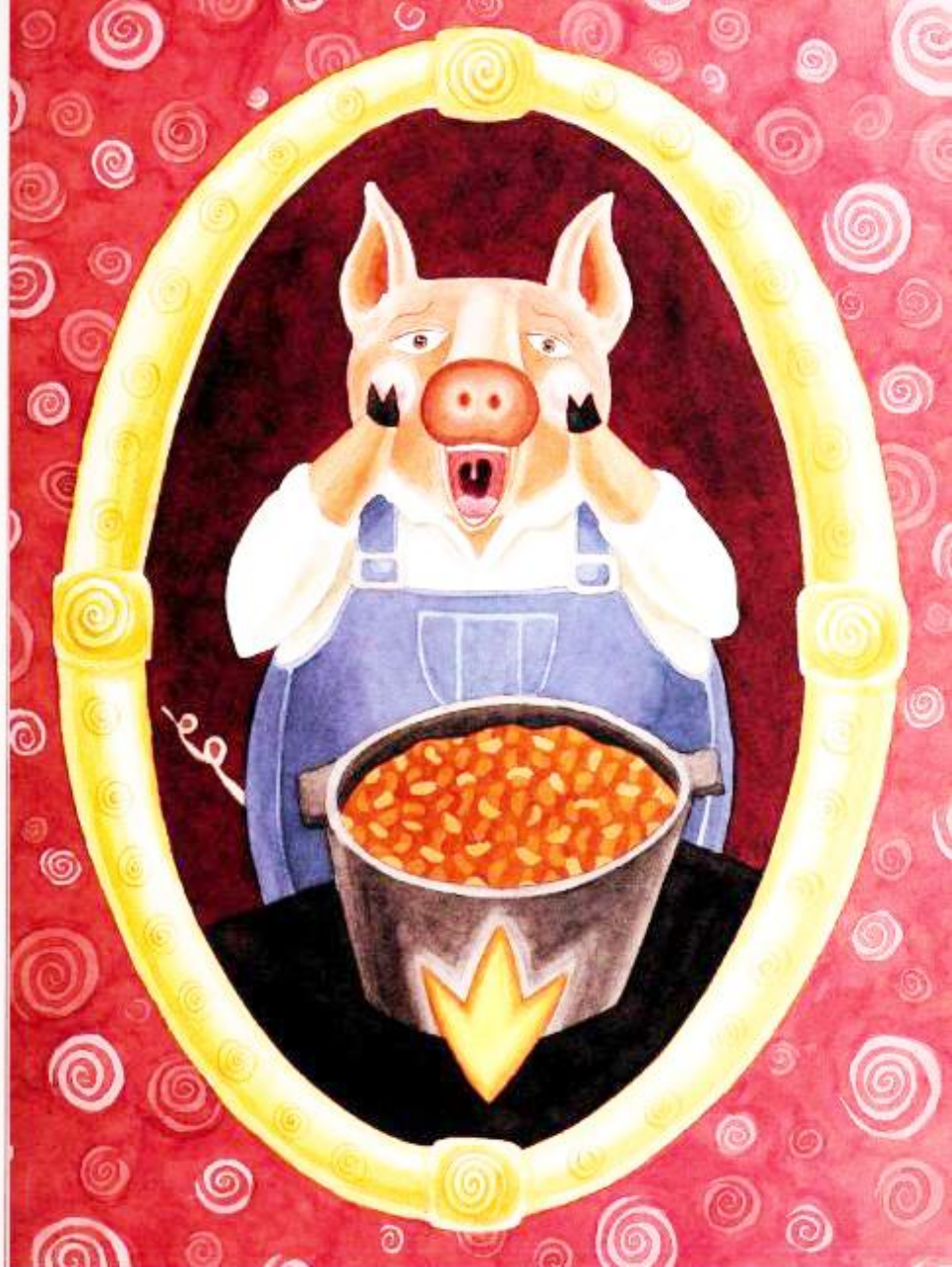

जैकी दरवाज़े की ओर जाने लगा पर लोमड़ी दरवाज़े के सामने ही सोयी हुई थी. उसने खिड़की का किवाड़ खोला और बाहर देखा. फिर उसने किवाड़ को धमाके के साथ बंद किया.

लोमड़ी उछल पड़ी. “यह क्या था?” उसने पूछा.

जैकी मुस्कराया. “ओह, मुझे बाहर कोई आवाज़ सुनाई दी थी. यह जानने के लिए कि क्या था, मैंने बाहर देखा था. बाहर लोमड़ियों के शिकारी हैं.”

“लोमड़ियों के शिकारी? क्या तुम ने लोमड़ियों के शिकारी कहा? मैं एक लोमड़ी हूँ, नन्हे शूकर! मुझे कहीं छिपा लो, नन्हे शूकर, मुझे छिपा लो!”

जैकी ने मक्खन मथने वाले पात्र को देखा जो माँ ने उसे दिया था. “तो ठीक है,” उसने कहा. “मुझे लगता है कि आप उस पात्र के अंदर छिप सकती हैं.” लोमड़ी झटपट उस पात्र के अंदर घुस गई.

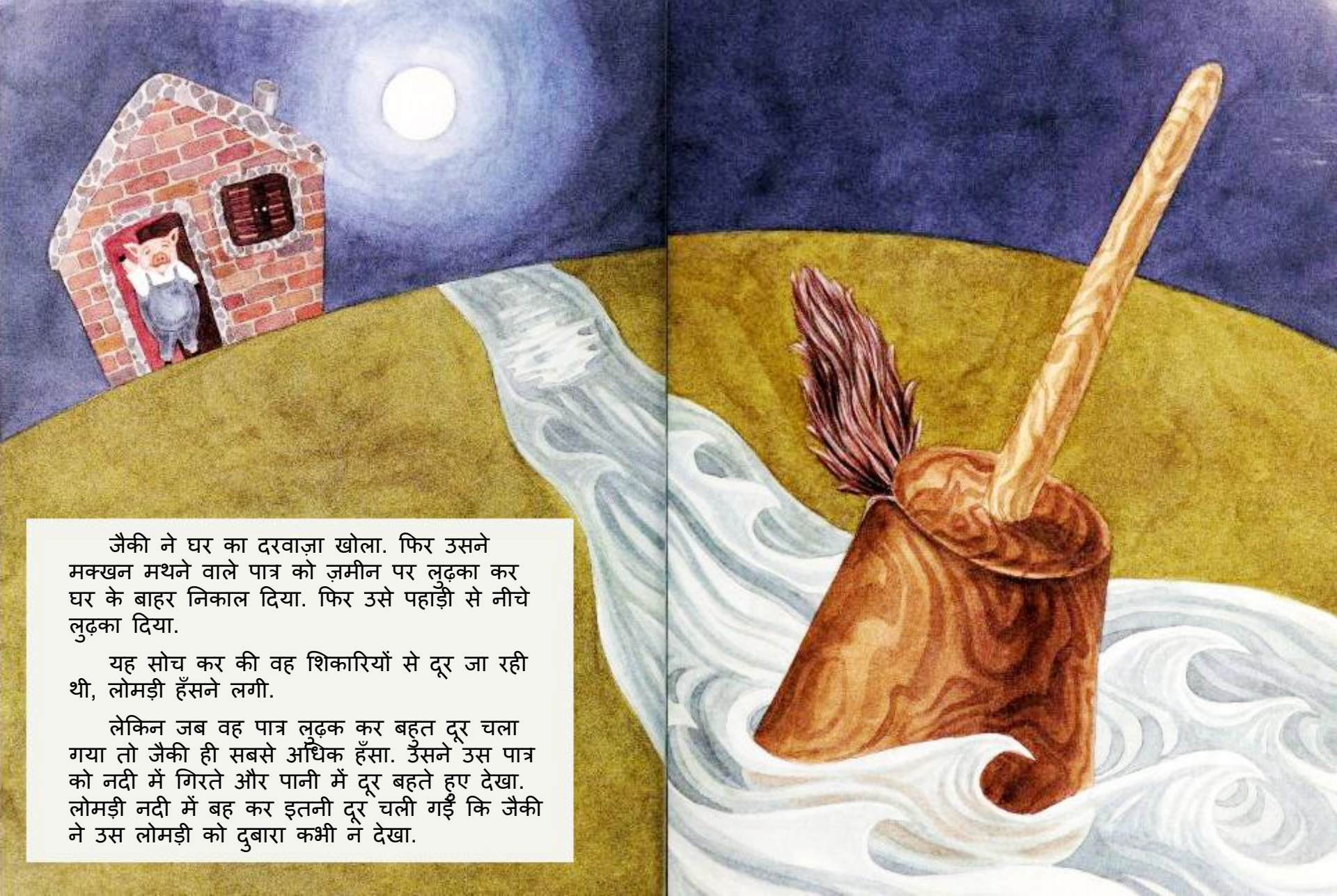

जैकी ने घर का दरवाज़ा खोला. फिर उसने मक्खन मथने वाले पात्र को ज़मीन पर लुढ़का कर घर के बाहर निकाल दिया. फिर उसे पहाड़ी से नीचे लुढ़का दिया.

यह सोच कर की वह शिकारियों से दूर जा रही थी, लोमड़ी हँसने लगी.

लेकिन जब वह पात्र लुढ़क कर बहुत दूर चला गया तो जैकी ही सबसे अधिक हँसा. उसने उस पात्र को नदी में गिरते और पानी में दूर बहते हुए देखा. लोमड़ी नदी में बह कर इतनी दूर चली गई कि जैकी ने उस लोमड़ी को दुबारा कभी न देखा.

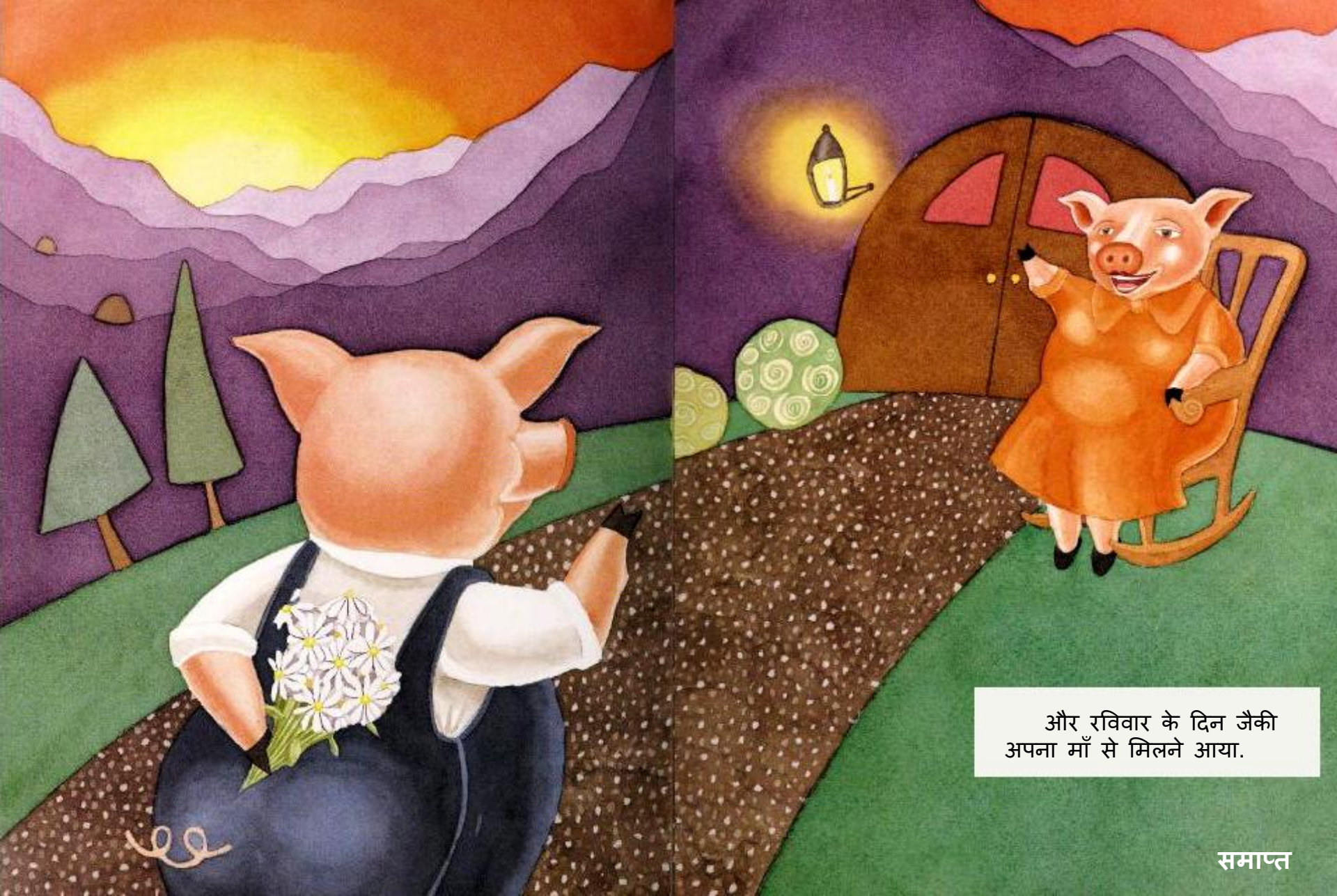

और रविवार के दिन जैकी
अपना माँ से मिलने आया.

समाप्त